वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

नवम्बर- 2014

* महोत्सव मुबारक निकट आ रहा है
* मौत का इश्क
* सत्य धर्म उत्सव और विशेष सत्संग
* सत्य धर्म बोध उत्सव
* भक्ति भाजन भगवन
* महोत्सव का कार्यक्रम

महोत्सब मुबारक निकट आ रहा है।

जैसे कि पिछले अंक में छप चुका है कि इस बार महोत्सव 5,6,7,8 दिसम्बर को धूमधाम से देव आश्रम (डेराबसी के निकट) में मनाया जाएगा। इसके लिए अभी से समय निकालने, छुट्टियां लेने आदि का प्रबन्ध करना चाहिए। श्रद्धा भाव से भरकर आने का निश्चय करना चाहिए।

जब तक यह अंक आप तक पहुंचेगा, तब तक आरम्भिक दिन गुज़र जाएगा। जहां तक सम्भव हो ईतवार के दिन मिलकर कीर्तन करने और भगवान देवात्मा की जय बुलाकर पूजनीय भगवान की रचित पुस्तकों का कुछ न कुछ पाठ करके आने वाले दिनों में अपने हृदयों को तैय्यार करना चाहिए।

इन महा यज्ञ के दिनों का प्रथम लक्ष्य हृदय की शुद्धि है। जैसे कि हमारी मनुष्य प्रकृति है, हम अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं से दूसरों को दुख पहुंचाते रहते हैं, उससे हमारे हृदय मैले वा विकारयुक्त हो जाते हैं, जो हमारे आत्मा के लिए महा विनाशकारी सिद्ध होते हैं। जब परम पूजनीय भगवान देवात्मा की रोशनी किसी सौभाग्यवान जन तक पहुंचती है, फिर केवल यही नहीं कि वह ऐसी चिन्ताओं वा गतियों से बचने के संग्राम में पड़ जाता है बल्कि पिछले विकारों से भी शुद्धि पाना चाहता है। अपनी नीचताओं के लिए दुख वा घृणा उत्पन्न होती है। उसका परिशोध करके अपने आत्मा को शुद्ध करना चाहता है। यदि ऐसा नियम इन दिनों में हमारे जीवन में पूरा हो जाए, तो हम कुछ न कुछ शुद्ध मन से पूजनीय भगवान का शुभ जन्म महोत्सव मनाने के योग्य होंगे। परम पूजनीय भगवान देवात्मा का जन्म-महोत्सव दूसरे धर्मों की तरह कोई इकट्ठ या मेला नहीं बल्कि हमें गुरू के और निकट होकर उनकी ज्योति शक्ति को किसी सीमा तक पाकर पहले से बेहतर इन्सान बनने का मौका है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है: -

"सर्वप्रथम इस बात की आवश्यकता है कि तुम्हारे दिलों की मैल धोई जाए और नीचता और उसके विकार से उसकी अच्छी तरह शुद्धि की जावे। क्या इस यज्ञ के साधनों में यह लक्ष्य पूरा हो रहा है? क्या तुम्हारे दिल धोए जा रहे हैं? तुम्हारे साधन ऐसे होते हैं कि जो तुम्हारे भीतर उपरोक्त प्रकार की ज्योति को लाकर-घृणा, अनुताप और दुख पैदा करके और तुम्हारी आंखों से आंसुओं की धार बहाकर तुम्हारे दिल को शुद्ध करने में सहायक हो रहे हैं? क्या आप अपने साधनों में ऐसी हालत लाने में एक दूसरे की कुछ सच्ची सहायता करते हो? सोचो और जबाब दो। विचारो और साधनों का सच्चा तत्व वा उद्देश्य सीखो और इस महा यज्ञ के दिनों में दिल की शुद्धि के लक्ष्य को पूरा करो।"

प्रार्थी सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 11

नवम्बर – 2014

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मौत का इश्क

मनुष्य का दिमाग चाहे करामातों का स्त्रोत वा धनी है। उन्होंने विश्व या ब्राहमण्ड के पदार्थों के नियमों के सम्बन्ध में बहुत अन्धेरा दूर करके रोशनी का सैलाब पैदा कर दिया है। मनुष्य ने धरती, समुन्द्रों, हवा और पहाड़ों तक को गहराई से खोजकर रोशन कर दिया है। परन्तु मनुष्य अभी तक अपनी प्रकृति सम्बन्धी अन्धेरों की खोज के सम्बन्ध में बहुत कुछ अनजान ही रहा है।

सारा संसार और सारा मनुष्य जगत अभी तक, अपनी प्रकृति के विषय में घनघोर अन्धेरे से घिरा हुआ है। इसलिए वह दुखों, हानियों और नाश से जूझ रहा है।

नेचर ने जब जीव जन्तुओं, पशुओं और मनुष्यों के अपने परिवर्तन अर्थात विकास के क्रम में वजूद विकसित किए तो उनके भीतर जीने के आकर्षण के साथ साथ सुखों के प्रति बहुत प्रबल आकर्षण उनके रोम रोम में रचा बसा है। जैसे पानी का नीचे की ओर बहना आवश्यक वा अटल नियम है, उसी प्रकार मनुष्य के लिए सुखों की ओर झुक जाना, उनके पीछे शुभ से विरक्त हो जाना एक अटल नियम है।

हर मानव भिन्न भिन्न सुखों के प्रति इश्क के आकर्षण से सिर से नख तक भरा हुआ है। सुखों के आकर्षण ही (कोई रब या ईश्वर नहीं) मानव हस्ती के प्रेरक और मुख्य चालक हैं। सुखों के धुरे के इर्दगिर्द प्रत्येक मनुष्य की जिन्दगी चक्र काटने के लिए मजबूर है। मनुष्य की बुद्धि, सोच, समझ या दिमाग, मनुष्य के सुखों के इश्क के नौकर वा गुलाम हैं। यह मनुष्य के लिए एक एक सुख की प्राप्ति के लिए तौर तरीके, तरकीबें, कोशिशें और सम्भावनाएं ही नहीं सुखों की तृप्ति करवाने के लिए केवल नौकर वा गुलाम वा सहायक बन बनकर अपना कर्तव्य निभा रहे हैं।

जीवित जगत के दुनियां के भीतर शरोमणी जीव होकर भी मनुष्य अधूरा है। बुद्धि, विवेक से विश्व को मनुष्य ने कैसे जगमगा दिया, उसने सब विभागों में अटल नियमों को खोज निकाला है। परन्तु मनुष्य अपनी प्रकृति की ओर से घोर अन्धेरे में है। इस अन्धेरे के कारण ही वह अधूरा है। यह जानने के लिए कि मेरे भीतर कौन कौन से सुखों के इश्क मेरे ऊपर राज कर रहे हैं। यह मेरे सुखों के इश्क मुझे किस ओर खींचे चले जा रहे हैं। मेरे सुखों के इश्क मुझे अपने में लीन वा रत रखते हैं। मेरे इश्क मुझे क्या बना रहे हैं।, मेरा क्या हुलिया बना दिया है। यदि मैं इसी प्रकार सुखों की तृप्ति में लगा रहा तो मेरा क्या हशर होने वाला है। अपनी ही हस्ती के साथ जुड़ी उपरोक्त सचाईयों को देखने के लिए मनुष्य अधूरा, अयोग्य वा असमर्थ्य है।

यह सुख स्वाद वा नीच आकर्षण मेरे लिए हानियां, असह्य दुखों और नाश के प्रतीक हैं। यह महान सत्य मनुष्य देखने के अयोग्य हैं। वह ज्वाला मुखी पहाड़ के मुहाने पर चारपाई लगाए मौज की नींद सो रहा है।

जैसे एक एक पतंगा वा परवाना रोशनी पर लट्टू है, उसका आशक है और उसकी ओर जाने के लिए मजबूर है। वह सुख चाहता है और सुख पाते पाते जलकर भस्म हो जाता है। इसी प्रकार एक एक मछली कुंडी पर लपेटे हुए आटे के आकर्षण में फंसकर कुंडी में फंसकर अपनी जान दे देती है। इसी प्रकार मनुष्य सुख को देखता है, उस सुख के द्वारा जो हानि और नाश होता है उसको नहीं देख सकता। मनुष्य की प्रकृति पुकार-पुकार कर कह रही है कि "मर जाना मन्जूर, परन्तु सुख पाना ज़रूरी है" परन्तु मनुष्य इस ठोस सचाई से हर समय विवेकशील वा जाग्रित तो नहीं रह सकता।

मनुष्य की सुखों की प्रकृति ने मनुष्य को घर घर, जगह जगह, नगर नगर, शहर शहर और देश देश, मौत का आशक बना रखा है। यह मानव हस्ती का मुख्य वा शिरोमणी दुखांत है। पहाड़ों में सुनामी की तरह वह बेबस अपने विनाश को देख रहा है।

कहीं मनुष्य शारीरिक सुखों का दास होकर अपने आप ही बिमारियों और मौत को निमन्त्रण दे रहा है। नशों के सुख के कारण किस प्रकार हर देश, नगर, गांवो की जो दुर्दशा देखने को मिलती है, वह दिल दहलाने वाली है। छोटी उमर में बच्चे, नौजवान कैंसर जैसी बिमारियों से घिरे हुए हैं और अल्पायु में मौत का शिकार हो रहे हैं। काम वासना का सुख पाने के लिए बलात्कार द्वारा कैसे छोटी छोटी मासूम बच्चियों को बर्बाद कर रहे हैं। इन बर्बादियों ने, कचहरियों, जजों और पोलिस वालों को भी मुसीबत डाली हुई है। मनुष्य के जीभ के सुख ने, मोटापा, शूगर, ब्लड प्रैशर, हार्ट अटैक, टैंशन, डिप्रैशन जैसे रोगों की भरमार कर दी है। मनुष्य के इस स्वाद सुख की लालसा के कारण प्रतिदिन लाखों पशुओं का वध किया जाता है और खून के दरिया बहाए जा रहे हैं। हमारे ज़्यादातर धर्म न केवल इस पाप को मिटाने का यत्न नहीं करते बल्कि उसे धर्म समझते हैं।

धन, सम्पद, पदार्थों और दुनियावी सामानों के इश्कों की होड़ लगी हुई है। भाई भाई, पिता पुत्र, पति पत्नियां और निकटी सम्बन्धी आपस में खानाजंगी कर रहे हैं। चोरियां, ठगी, रिश्वत, मिलावट, सीनाज़ोरी घोटाले, कत्ल आदि प्रतिदिन अख़बारों की सुर्खियां बनी हुई हैं। सारा समाज इन सुखों द्वारा उपजे पापों में ग्रस्त है।

सन्मान, इज्ज़त, मान मर्तबा, हकूमत, पदवियों के आकर्षण ने भी करोड़ों मनुष्यों को अपना गुलाम बना लिया है। मान, बड़ाई, अपनी चौधर, सत्ता के सुखों की भूख ने लाखों करोड़ों मनुष्य अपने परवाने बनाए हुए हैं, इनकी प्राप्ति के लिए मनुष्य ने सिर धड़ की बाजी लगाई हुई है। ऐसे मनुष्यों के हाथों स्वार्थ, लूट खसूट, धक्काशाही, लोभ, लालचों अन्याय, झूठ, दूसरों पर चीकड़ उछालना, निन्दा का बाज़ार गर्म रखना, बिना कारण दूसरों की नींदे हराम रखना, जारी है।

थोथे धार्मिक जनून ने अनगिणत सिरफिरे पैदा कर रखे हैं, उन्होंने सारी दुनियां में आतंक की आग फैला रखी है। उन्हें केवल मरना और मारना ही प्यारा और ठीक लग रहा है। इसी को वह उच्च दर्जे की कुर्बानी और ज़िन्दगी समझते हैं। केवल विनाश और तबाही ही महान कार्य महसूस होता है। मानवता के इस तबके को ज़हर प्यारा, मीठा और ठीक लग रहा है। उन्हें यह अत्याचार वा आतंकवादी गतियां ही सुख देती हैं। इस नीच सुख से किस कदर तबाही

आती है, इस ओर से वह पूर्ण अन्धकार में हैं।

इसी प्रकार मिथ्या मूलक विश्वास रखकर मनुष्य अन्धेरे में भटक रहे हैं। गंगा स्नान करके या किसी तीर्थ स्थान की यात्रा करके या हररोज़ थोड़ा मूर्ति के आगे फूल रखकर वा मत्था टेककर वह समझते हैं कि उनके सब गुनाह क्षमा हो जाएंगे, कितना बड़ा अन्धकार! गुनाह करने को कितना बड़ा प्रोत्साहन!! अधिकतर जनता इस अन्धेरे में ही सारा जीवन व्यतीत कर देती है।

पाप और मिथ्या में संसार जल रहा है। आत्मिक अन्धेरा संसार में चारों तरफ छाया हुआ है। रोशनी के सुख को पाने वाले पतंगे की तरह, अदना विनाशकारी सुखों के इश्कों में मौत छुपी हुई सुखों के आकर्षण देखने नहीं देते। इनको देखने और उनसे बचने में मनुष्य पूर्ण असमर्थ्य है। मनुष्य आसमान में बैठे किसी रब वा ईश्वर की रहमत की ओर आशा लगाए बैठे हैं। हज़ारों सालों से यह आशा पूरी नहीं हुई और न हो सकती थी, परन्तु मनुष्य की मूल प्रकृति के न जानने से उनकी आशा अब भी वहीं लगी हुई है। मनुष्य बहुत धार्मिक साधन करते हैं परन्तु उनका ध्यान अपनी ओर नहीं जा रहा। हमारे पूजा, पाठ, आरतियां हमारी फितरत को रोशन करने में असर्मथ्य हैं। इसी कारण हमारी सुख अनुरागी प्रकृति को जाने बगैर कोई धर्म इसमें सहायक नहीं हो रहा। आवश्यकता ईश्वर को ढूंडने की नहीं, अपनी फितरत को ढूंडने की है। वह रोशनी, वह टार्च मनुष्य के और न किसी ईश्वर के भीतर है, जो मौत के इश्कों को दिखा सके।

जैसे बिल्ली को चूहे खाने, शेर को मांस खाने की भयानकता को दिखाना असम्भव है, इसी प्रकार मनुष्य को अपनी वा दूसरे की फितरत के विनाशकारी रूप को दिखाना कठिन है, उसको बदलना भी असम्भव है। यदि यह सम्भव होता तो दुनियां का नक्शा कुछ और होता। नये नये धर्म चाहे कितने भी आ जाएं, कोई कारगर नहीं हो सकता। पशुओं के गरोह कितने भी इकट्ठे हो जाएं, उन्हें किताबी ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

मनुष्य को आवश्यकता है ऐसे सत्य वजूद की, ऐसे योग्य रोशनी वा शक्ति के भण्डार वा स्त्रोत की जो मनुष्य को उसकी प्रकृति को दिखा सके। उसकी सुख अनुरागी प्रकृति वा उसके भयानक फलों को रोशन कर सके, उनकी तुफानी प्रबलता और भयानकता को दिखा सके और शक्ति प्रदान कर सके कि मनुष्य मौत के इश्कों को नष्ट करके अपने भीतर हितकर, निर्माणकारी प्रेम को पैदा कर सके।

नेचर के अद्भुत विकास क्रम में सुखों के इश्कों के स्थान पर सत्य और शुभ के इश्कों को अता करके उक्त रोशनी और देव तेज से सम्पन्न देव धर्म के बानी को अद्भुत रोशनी के स्त्रोत बना कर पैदा किया है। उन्होंने अपनी क्षमता से मानव प्रकृति को मौत के इश्कों से मुक्त करके उनमें उच्च प्यार संचार करने का अद्भुत कारज भी आरम्भ कर दिया है। मानवता उनके इस देव ज्योति और देव तेज को हज़ार बार परखे और समय रहते रहते अपनी फितरत को जाने और सुधारे, अपनी योग्यता अनुसार आवश्यक लाभ होगा। जिन्होंने इस ज्योति तेज को पाया है, उनकी शहादत जानें।

बलदेव सिंह

सत्य धर्म उत्सव और विशेष सत्संग

जैसे पहले पत्रिकाओं द्वारा बताया गया था कि 19 सितम्बर से 26 सितम्बर सुबह तक विशेष सत्संग रखा गया। इस सत्संग को करवाने के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी समय अनुसार पहुंच गऐ थे।

इस सत्संग से लाभ उठाने के लिए श्रीमान डा० मुनशा सिंह जी सेतिया साहिब के साथ पदमपुर से श्री अग्रवाल साहिब लखनऊ से, कुमारी अशोका जी, श्रीमती भरपूर कौर जी अमरीका से अपने एक बेटे और उसके दोस्त के साथ, उनकी छोटी बहन वीरपाल जी, श्रीमान नरेन्द्र जी चौधरी मेरठ से, श्रीमान सुभाष जी परिवार समेत, श्रीमान सुरेश जी अग्रवाल पंचकूला से, श्रीमान चन्द्रगुप्त जी परिवार सहित अम्बाला से, श्रीमान दीप चन्द जी पत्नी समेत मेरठ से, विनोद जी खेड़ा, शशी जी, प्रिंसीपल सुरजीत जी बराड, डा० सतिन्दर जी ढिल्लों , जलधर जी, श्री मधु सूदन जी चण्डीगढ़ से, डा० नम्रता जी गुडगांव से, श्री धर्म सिह जी चौहान पत्नी समेत और बेनी प्रसाद जी समेत पंचकूला से, श्रीमान ओम प्रकाश जी आदर्श, श्री खुशपाल सिह जी बंगा और लोकल 5 – 7 जन, श्रीमान किशन सिंह जी चौहान अपने नाती के साथ, श्री अकबरपुर से सत्संग की 2 सभाओं मे शामिल हुए।

इस सत्संग में ठहरने, रहने का विशेष प्रबन्ध किया गया, सभाएँ सुबह शाम होती रही। सभाओं में भजनों का गान चन्द्रगुप्त जी, जगदीश जी करते रहे।

सभाओं का विशेष वर्णन इस प्रकार है: –

9.30 बजे सुबह 19.9.2014

सभापति श्रीमान बलदेव सिह जी। भजनों के गान वा देव स्तोत्र के बाद श्री सभापति जी ने गम्भीरता पूर्वक आर्शीवाद प्रार्थना की। उन्होंने बताया कि दुनियाँ के भीतर धर्मों वा धर्म स्थानों की कमी नहीं। परन्तु फिर भी मानवता दुःखों से कराह रही है। बलात्कार जैसी घटनाओं ने भारत का सिर नीचा कर दिया है। भ्रष्टाचार देश के विकास पर ग्रहण की तरह लगा हुआ है। सब के कारण नीच सुखों की गुलामी है। पुजारी भी नीच सुखों के वश अत्यन्त घृणित घटनाओं में गिरफ्तार देखे जाते हैं। यह सब हानियाँ तो कुछ नज़र आ जाती हैं, परन्तु आत्मिक हानि नजर नहीं आती, परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव शक्तियों से ज्योति प्रकाशित हुई है, वह जब अधिकारी आत्माओं में प्रवेश करती है तो उसको आत्मा का रूप, रोग, हानि लाभ नजर आता है। सभापति जी ने उनके कुछ ठोस उदाहरण प्रस्तुत किए जिनके जीवन में आश्चर्य जनक परिवर्तन आया है। यह वातावरण ऐसा अनोखा है जिसमें ऐसा अनुपम कार्य होता है।

शाम 5 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी इसमें सभापति जी ने प्रश्न किया कि धर्म की क्यों आवश्यकता है और उसे समझाया कि हमारी बुनियादी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए धर्म की आवश्यकता है। धर्म के आने से मनुष्य उचित सुखों का अवश्य भागी बनता है अनुचित दुख दूर हो जाता है, जीवन जीने के योग्य हो जाता है, शरीर और आत्मा दोनों का विकास होता है, बिना सच्चे धर्म के अमीर, विद्वान, धनवान, पदधारी यहाँ दुखी होते हैं वहां अपने जीवन का नाश करते हैं वह जन महा सौभाग्यवान है जो धर्म अभिलाषी बन जाते हैं।

20.9.2014 सुबह सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, सभापति जी ने बताया कि हम सब आंखें रखते हैं आखों से सब कुछ नज़र आता है पर बहुत कुछ ऐसा भी है जो इन आंखों से नज़र नहीं आता।

सूक्ष्म पदार्थ वा भौतिक शक्तियाँ इन आंखों से नज़र नही आती। हवा में क्या क्या है वह इन आंखों से नज़र नही आता। आत्मा क्योंकि शक्तिमय है, वह भी इन आंखों से नजर नहीं आता। इस नादर दर के बिना आत्मा का ज्ञान कहीं भी नही है। इन आखों से दूसरों के गुण भी नज़र नही आते। हमदर्दी की आंख के बिना दूसरों के दुख नज़र नहीं आते। दूसरों के उपकार बेशुमार भी नजर नहीं आते। उपरोक्त सब आन्तरिक आखें (भाव) पैदा करनी पड़ती हैं। इस ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता क्योंकि हम अपने आपको सब से अधिक प्यार करते हैं। धर्म तब आता है जब आत्मा की हानि लाभ का बोध पैदा होता है। हम विकारों और दोषों से भरे हुए हैं, परन्तु हमारा ध्यान तब ही अपनी ओर जाता है, जब परम पूजनीय भगवान देवात्मा की रोशनी हमारे आत्मा में संचार होती है। सभापति जी ने अपने निजी दोष और कुछ प्रभाव दायक उच्च परिवर्तनों को भाव पूर्ण ढंग से पेश किया। इसी प्रभाव दायक संगत में हम अपने दोषों को देख सकते हैं।

शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:– श्रीमान चन्द्रगुप्त जी ने "गाफिल मन के नेत्र खोल" नामक भजन का गान किया। उसके बाद सभापति जी ने बताया कि मनुष्य की प्रकृति सुख परायण है, जितनी मनुष्य सुखों की तृप्ति करता जाता है, उसका हार्दिक अन्धकार बढ़ता जाता है। जीवन की हकीकतों से मनुष्य ग़ाफिल होता जाता है। यह जीवन की अटल सचाई है कि प्रत्येक मनुष्य की शारीरिक मौत हो जाती है। मनुष्य इस ठोस सचाई से भी ग़ाफिल रहता है। जीवन में अनेकों अवसर आते हैं, जब यह सचाई सामने खड़ी हो जाती है और फिर भी नहीं सोचता कि मेरी भी मौत आ जाएगी। इस लोक की यात्रा ख़त्म हो जाएगी। जैसे बच्चा खिलौनों से खेलने में मस्त रहता है, मनुष्य संसारिक सामानों जायदादों, धन, पद, मान बढ़ाई में मस्त रहता है। परोपकारी भी मान प्रशंसा के शिकार हो जाते हैं। अपमान मिलने पर सेवा के कामों से उदासीन हो जाते हैं। संसारिक सम्बन्धी वा सामान हमारे पास नेचर की अमानत हैं। इस संगत के प्रभाव से डा० मनसा सिंह जी ने जवान बेटे की जुदाई को कैसे सहन किया। मोह बन्धन से मुक्त होना जीवन जांच है। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी जीवन की असारता पर रोशनी डाली।

21.9.2014 सुबह 9.30 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने फरमाया कि इस संसार में गुरू महाराज को कोई नहीं जानता। जो जानते हैं वह भी बहुत थोड़ा जानते हैं। जैसे एक वैज्ञानिक ने भाप की खोज की, गुरू महाराज ने नये सत्य धर्म की खोज और प्रचार किया। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा शक्तिमय (भावों का समूह) है। गुरू महाराज ने फरमाया है कि धर्म प्राप्ति के लिए हानि रहित होना चाहिए, इसीलिए उन्होंने आठ पापों का त्याग आवश्यक बताया। हानिकारक जीव धर्मवान नहीं हो सकता। धर्म के लिए ईमानदारी, पवित्रता की आवश्यकता है। इनकी उदाहरण पेश कीं गई। उच्च भाव अर्थात हमदर्दी, न्याय, शुक्रगुज़ारी आदि के बिना धर्म नहीं होता। जैसे आटा,घी,चीनी और आग के बिना हलवा नहीं बन सकता, उसी प्रकार परसेवा के बिना धर्म नहीं होता। स्वार्थ धर्म का शत्रु है। शुक्रगुज़ारी की बहुत सुन्दर उदाहरणें पेश की गई। गुरूबख़्श सिंह जी की परसेवा की बहुत सुन्दर घटनाएं बताई। इससे आगे आत्मा की बनावट, उसके रोगों वा सेहत का बोध धर्म की अगली मंज़िल है। एक पति ने अपनी पत्नी के प्रति स्वार्थी बनकर क्या

लीला दिखाई, उसका ज़िकर किया।

शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी जगदीश प्रसाद जी ने सुन्दर भजन का गान किया, फिर सभापति जी ने भजन की इस पंक्ति को दोहराया, "कौन चिन्ता, कौन क्रिया, मेरा क्या कुछ बनाती है" फिर और बताया कि जीवन हर समय बदल रहा है, आत्मा निर्लेप नहीं है। नेचर (विश्व) का हर अंश, हर समय बदल रहा है Change is the law of nature) नेचर क्या है, उसका सच्चा ज्ञान क्या है, इसका ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इस विषय पर ही सभा करवाई। बताया गया कि नेचर में अटल नियमों का राज है। नियमों को बदलने या उसके विरुद्ध कोई क्रिया या करामात सब झूठ है। कोई व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं कर सकता। धर्म पाने के लिए नेचर के नियम हैं। अधिकारी अवस्था के बिना धर्म के प्रभाव नहीं मिलते। उच्च संगत धर्म प्राप्ति की दूसरी शर्त है। संगत के प्रभाव से एक उच्च परिवर्तन की बहुत सुन्दर उदाहरण पेश की।

22.9.2014 सुबह 9.30 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। इस सभा में भी पहले की तरह 35 – 40 जनों की हाज़री थी। सभापति जी ने बताया कि नेचर के नियमों को जो पूरा नहीं करता, उसका परिणाम भुगतना पड़ता है। सेहत, विद्या, धर्म प्राप्ति सबके नियम हैं। धर्म प्राप्ति का पहला नियम मोटे मोटे पापों से निवृत होना है। दूसरा नियम झूठ और मिथ्या से बचना है, तीसरा नियम जिन्दा प्रभाव दायक संगत में नियमित रूप से आना। ऐसी संगत जिसमें देव प्रभाव मिलें और अपना आप नज़र आए और उच्च बनने की प्रेरणाएं मिलें। चौथी बात कि पहले से बेहतर से बेहतर बनना। इसके लिए आवश्यक है नेक, गुणवान व्यक्ति के उच्च रूप को अनुभव करना, स्वयं को उनके आगे तुच्छ समझना, उनकी तह दिल से प्रशंसा और महिमा गाना। ऐसा करते करते उस सुन्दर महान रूप को किसी अंश ग्रहण करना। श्रीमान जी ने कैसाबियांका की सुन्दर घटना का वर्णन किया, जिसकी महानता को इंगलैंड ने सराहा और उसकी महिमा गाई। और भी कई गुणवान व्यक्तियों की उदाहरणें पेश की। श्रोतागण को गुणधारी जनों के गुणों को देखने और श्रद्धाभाव पैदा करने और विकसित करने के लिए प्रेरणा की।

शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इसमें बताया गया कि मनुष्य के नीच सुख उसके शत्रु हैं। और मनुष्य के मित्र उसके उच्च भाव हैं। नीच भावों को बढ़ाना उसी प्रकार है, जैसे हिंसक पशुओं को पालना। नीच भाव हमें हिंसक बनाते हैं। काम वासना हिंसक बनाकर अत्याचारी बनाती है। स्वार्थ और अंह मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। अहं अनुराग महा घातक है। एक महान अहंकारी डाक्टर और घृणा के शिकार एक पोस्ट मास्टर की सच्ची घटनाएं बताई। इस घातक घटनाओं के द्वारा उन्होंने मनुष्य के भीतर के शत्रुओं को दिखाने की कोशिश की। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने ऐसी संगत पैदा की है, जहां वह रोशनी और शक्ति मिलती है, जो हमें हमारे घातक शत्रुओं को दिखाती है और उनसे बचने की शक्ति देती है।

23.9.2014 सुबह सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने पिछले दिन की श्रद्धा की सभा को दोहराते हुए, श्रद्धा भाव की आवश्यकता बताई। महात्मा गांधी जी के विशेष गुणों का वर्णन किया। उनके भीतर हमदर्दी, पवित्रता थी और जाति – पाति का भेदभाव नहीं था। सत्य बोलने की ओर बहुत रुझान था। जेलों में कितनी बार यातनाएं सहन की। महाराणा प्रताप, भीष्म पितामहा आदि के

महान रूप को प्रगट किया। उसके बाद सुरजीत बराड़ जी और भरपूर कौर जी ने उच्च जनों के गुणों की घटनाएं बताई।

फिर शुक्रगुजारी के भाव के विषय में बताया कि कैसे उनसे अपने पुराने अध्यापिक की सेवा करवा दी फिर श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के अपने परिवार पर वा उस इलाके पर उपकारों का वर्णन किया। भरपूर कौर जी ने अपनी मासी के उपकारों का वर्णन किया और कहा कि मैं मासी जी के पास जाऊंगी और उनकी सेवा करूंगी। श्रीमान बेनी प्रसाद जी ने श्रीमान गुरबख़्श सिंह जी के उपकारों का वर्णन किया। यह सभा बहुत प्रभाव दायक थी।

शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: श्रीमान चन्द्रगुप्त जी ने भावपूर्ण होकर जब भजन का गान किया, तो बहुत सुन्दर मण्डल बन रहा था। फिर सभापति जी ने बताया कि धर्म सम्बन्धों में है। पाठ, पूजा, जंगलों वा पहाड़ों पर जाने से धर्म नहीं आता। प्रत्येक व्यक्ति प्रभाव छोड़ता है। वह प्रभाव दूसरों को प्रभावित करते हैं। एक पिता घर में वेश्याओं का नाच गाना, मुजरे करवाता था, उसकी लड़की भी भागकर वेश्या बन गई। उच्च जन उच्च असर छोड़ते हैं, उनके चरणों में बैठकर पवित्रता के असर ग्रहण करके मनुष्य पवित्र बन जाते हैं। सम्बन्धों को बेहतर बनाने के लिए उच्च भावों की आवश्यकता है। यही धर्म है। एक सास का बहुत सुन्दर उदाहरण दिया। उसके शुभ व्यवहारों का वर्णन किया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की कृपा से एक 2 नये जन ने अपने बुरे व्यवहारों को देखा है। अपने अपराधों के लिए दुख अनुभव किया है। मैं भी एक बार अपनी बहन को बहुत सख़्त बोला, जिस कारण अब भी मुझे शर्मसारी हो रही है। एक जुड़वां भाईयों की कुर्बानी का वर्णन किया, जिसने भाई को खुशी अपनी किडनी दे दी। यह सभा भी बहुत प्रभावशाली थी।

24.9.2014, सुबह 9.30 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। इसमें "शरण तुमरी न आता मैं तो क्या होता कहां होता।" नामक भजन ने बहुत सुन्दर वातावरण बना दिया। चन्द्रगुप्त जी ने बहुत भावपूर्ण होकर यह भजन गाया।

सभापति जी ने बताया कि कपटता और कृत्घनता। दो ऐसी बुराईयां हैं जो मनुष्य का कोई भला नहीं होने देती। यह महा पाप हैं, इससे बड़ा कोई पाप नहीं। जो व्यक्ति उपकारी को सताता और तड़पाता है, वह कृत्घन होता है। शुक्रगुजारी का भाव मनुष्य को धार्मिक बनाता है। एक बाबू जो डाकू बन गया था, परन्तु उसका अफसर जब जंगल में से गुजरा, उसने पहचान लिया, तो न केवल उसको लूटा नहीं, बल्कि उन्हें सुरक्षित उनके निर्धारित स्थान पर पहुंचाया, एक डाकू के भीतर भी कृतज्ञता का भाव होने से अपने उपकारी की मेहरबानियों को नहीं भूला। औरंगज़ेब ने सम्राट होकर कृतज्ञता शून्य होने से अपने पिता को कैद में रखा और उसे तरह तरह से सताया। फिर सभापति जी ने बताया कि मैं भी इस धर्म संगत के बिना अपने माता पिता के उपकारों को देखने के भी अयोग्य था। यहां के प्रभावों ने मुझे माता की सेवा करने के योग्य बनाया।

24.9.2014, सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। इसमें सभापति जी ने बताया कि नीच भाव अन्धेरा पैदा करते हैं, अन्धेरा हमारा हानि, दुख और विनाश करता है। काम अनुराग किस कदर महा घातक सिद्ध हो रहा है। नीच भाव अपराधों के जन्मदाता हैं। धन अनुराग भी महा घातक है। इस अनुराग से सब घोटाले होते हैं, जेलों में जाकर एक एक बड़े पदधारी दुख और कष्ट उठाते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति में इन नीच

अनुरागों की भयानकता नज़र आती है। उनसे बचने की प्रेरणा मिलती है। अहं अनुराग सब सम्बन्धों में नर्क और सन्ताप पैदा करता है। पति पत्नी के रिश्ते में भी अंह अनुराग और नीच घृणा महाघातक सिद्ध होते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव हमारे लिए सबसे आवश्यक हैं। काश! मानवता इस सर्व्वोच्च देन को पहचान सके।

25.9.2014, सुबह सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। इस सभा में 40 के लगभग जन शामिल हुए। धर्म प्राप्ति के नियम दोहराए गए। हानिकारक जीवन से बचना, मिथ्या, से बचना, धर्म संगत में आना ताकि उच्च जीवन की प्रेरणाएं मिल सकें। श्रद्धा का भाव पैदा करना बहुत महत्व पूर्ण नियम है। श्रद्धेय श्रीमान जमीयत सिंह जी ने सरदार सावन सिंह जी को बड़ी उमर में पढ़ाया और उन्हें तहसीलदार बनवाया, क्योंकि कुछ दिनों के लिए सावन सिंह जी उनकी सेवा की थी। सावन सिंह जी उनके उपकारों को कभी नहीं भूले। श्रद्धेय श्रीमान जमीयत सिंह जी की पुत्रवधु कुछ दिनों का बच्चा छोड़कर स्वर्गवास हो गई तो सरदार सावन सिंह जी उस बच्चे को ले गए, अपनी छोटी सी दूध पीती बच्ची को उसके ननिहाल छोड़ आए, परन्तु उस बच्ची की मां अपने उपकारी के पोते को दूध पिलाती रही वह बच गया, परन्तु उनकी अपनी बच्ची दूध के बिना मर गई। सरदार सेवा सिंह जी ने अपने उपकारी की अपने पाकिस्तान से आने पर दी हुई ज़मीन अपने हालात सुधरने के बाद न केवल वह ज़मीन वापिस की बल्कि उनके देहान्त पर उनके सारे परिवार की पूरे दिल से देखभाल की। गुरूबख़्श सिंह जी प्रीतलड़ी ने अपनी भैंस, जिसका नाम नंदी रखा हुआ था, उस पर लेख लिखा था और उसका दाह संस्कार बहुत सन्मान पूर्वक किया। कृतज्ञता ही ऐसे दृश्य पैदा करती है।

इस सभा से प्रभावित होकर भजनी जी ने अपने भाईया जी के उपकारों का वर्णन किया, अशोक जी अपने भाई के उपकारों का वर्णन किया। सभापति जीने भी अपने उपकारियों का विशेष गहरे भावों से वर्णन किया। बेनी प्रसाद जी ने रो रोकर श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान जी के उपकारों का वर्णन किया। देव प्रभावों का बहुत सुन्दर वातावरण बना।

25.9.2011 शाम 5 बजे, सभापति श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान। श्रीमान किशन सिंह जी चौहान के नाती ने 2 बहुत सुन्दर भजनों का गान किया। सभापति जी ने बताया कि कई दिनों से देव प्रभावों की वर्षा हो रही हैं। उन्होंने बताया कि दुनियां में मिथ्या मतों का जाल फैला हुआ है। दुनियां में सच्चे धर्म की कोई समझ नहीं है। नेचर के नियमों का ज्ञान है। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा भी नेचर के नियमों के अधीन है। जैसे शरीर के बनने और बिगड़ने के नियम हैं उसी प्रकार आत्मा का भी बनना और बिगड़ना नियमों के अधीन है। आत्मा में उच्च परिवर्तन परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में ही सम्भव है। नीच भावों की लीला बड़ी भयानक है, उसके कई उदाहरण पेश किए और संगत में आए उच्च परिवर्तन की भी घटनाएं पेश की।

25.9.2014, सुबह 9.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: सभापति जी ने बताया पहले शरीर का ज्ञान नहीं था, अब X-Ray, थर्मामीटर, Endoscopy, Scanning, Angiography, MRI, CT Scan, आदि अनेकों टैस्ट हैं, जिससे शरीर का पूरा ज्ञान मिल जाता है। परन्तु आत्मा के विषय में दुनियां में पूर्ण अन्धेरा है। इसलिए दुनियां में पाप और अपराध हैं। मनुष्य अपने इस रूप को देखने के पूर्ण अयोग्य हैं। मनुष्य में अनेकों कमियां हैं, अधूरापन है। इसलिए दुनियां के सब सम्बन्धों में नर्क है। परम पूजनीय

भगवान देवात्मा को नेचर ने ऐसा अनोखा रूप दिया है, जिनके भीतर ऐसी विशेष योग्यता है कि वह मनुष्य को उसके आत्मा का प्रकृत रूप दिखा सकते हैं। यह ज्ञान देवात्मा के साथ जुड़कर ही प्राप्त हो सकता है। उनकी ही रोशनी में एक बज़ुरग भाई ने अपनी बहन के प्रति अपने दुखयवहार को देखा और उनके ससुराल में जाकर उनसे क्षमा-याचना की। एक और बज़ुरग ने अपने स्वार्थी, बेईमान रूप के लिए, पछतावा किया और रुपये वापिस किए। कई जनों ने पशुओं के प्रति अपने अपराधी रूप को देखा। गुरूमहाराज की ही रोशनी में एक 2 जन ने अपने गरीब नौकर के प्रति अपने अपराधी रूप को देखा है और क्षमा मांगी है। अपनी की हुई ग़ल्तियों को कोई जन अक्ल वा विद्या द्वारा नहीं देख सकता, इसलिए हमें इस रोशनी की अत्याधिक आवश्यकता है।

सत्य धर्म बोध उत्सव

जैसा कि पहले बताया है कि सत्य धर्म बोध उत्सव देव आश्रम, देवी नगर, डेरा बस्सी के निकट 26 सितम्बर से 28 सितम्बर तक मनाया गया। उसमें एक सुन्दर हाल को तैय्यार किया गया। ठहरने, खाने पीने आदि का ज़रूरत अनुसार प्रबन्ध किया गया। सजावट वा फोटोज आदि लगाने का काम जगदीष जी की सहायता से किया गया।

पहले यात्रियों के भिन्न मल्लेका, केसूपुरा से 8 जनों की पार्टी, गंगानगर, अम्बाला, पटियाला, डेराबस्सी, संगरूर के एक गांव से 8 के लगभग जन इस सत्संग में शामिल हुए। प्रोग्राम इस प्रकार रहा।

26.9.2014, शाम 4.30 बजे।

प्रवेश सभा

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

एक भजन के बाद देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई सभा का विषय था:- सत्य धर्म बोध की आवश्यकता।

सभापति जी ने भगवान देवात्मा के दरबार में आर्शीवाद प्रार्थना की ताकि इस उत्सव में देव प्रभावों का वितरण हो और सबके लिए अधिक से अधिक हितकर हो सके।

इस उत्सव का मकसद मनुष्यों को आत्मा का बोध वा ज्ञान देना है। अपने आपको जानना ही सबसे ऊंचा ज्ञान है। आत्मा का ज्ञान ही धर्म का ज्ञान है। परम पूजनीय भगवान की ज्योति के बिना मनुष्य अपने सम्बन्ध में अन्धकार में रहता है। अपने स्वयं के अनुभव भी बताए कि किस प्रकार मैं अन्धकार में अपना ग़ल्त मुल्यांकन करता था। फिर उदाहरणों द्वारा अपने प्रति ज्ञान न पाकर मनुष्य कितनी हानि उठाता है बताया। फिर खड़े होकर सभापति जी ने आने वाले यात्रियों का स्वागत किया और इस उत्सव से लाभ उठाने के स्पष्ट नियम बताए और उनके प्रति जाग्रित किया।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने यात्रियों का स्वागत किया और दूसरे दिन का प्रोग्राम बताया।

27.9.2014, सुबह 9 बजे: सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। विषय : आत्म-अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ। पहले सभापति जी ने ज्ञान और बोध में अन्तर बताया। समझाया कि बोध क्या होता है, धन का बोध, स्वाद का बोध, शरीर के लाभ और हानि का बोध। बोध का अर्थ है, किसी चीज़ की हानि और हित का बोध। आत्म बोध बहुत

सर्वश्रेष्ठ बोध है, इसके लिए पूजनीय भगवान के प्रभावों को पाना, उनके ग्रन्थों को पढ़ना लाज़मी है। हमारी निर्माणकारी शक्ति(आत्मा Living Force) कैसे बढ़ती वा घटती है। यही आत्मा की मुख्य शक्ति है। यदि उच्च संगत का बोध नहीं तो आत्मा का बोध नहीं। आत्मा के पतन, आत्मा की हानि, विनाश वा विकास का बोध ही आत्मा का बोध है। आत्मा की हानि और उससे डर ही आत्मा के बोध की निशानी है। मोटे मोटे नीच अनुराग सबसे बढ़कर अंह अनुराग का बोध ही आत्मा का बोध है। आत्म बोध न होने की सबसे बड़ी हानि यह है कि मनुष्य अपना आप नहीं देख सकता। उससे भी बड़ी हानि है कि देवात्मा के देव रूप के दर्शन नहीं कर सकता, उनसे जुड़कर अपनी आत्मिक भलाई नहीं कर सकता। तीसरी बड़ी हानि मनुष्य अपने जीवन के सच्चे लक्ष्य को नहीं जान सकता और उसकी प्राप्ति नहीं कर सकता। आत्मा के बोध के द्वारा अधिकारी मनुष्य अपने शरीर और आत्मा के विकास के पथ का राही बनकर उच्च जीवन प्राप्त करता है। उच्च जीवन से बढ़कर कोई लाभ नहीं, नीच जीवन से बढ़कर कोई हानि नहीं। आत्म बोध जैसे जटिल विषय को सभापति जी ने बहुत ही सरल ढंग से समझाया जो बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ।

11.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। पूजनीय देव शास्त्र खण्ड चार से सभापति जी ने पहले शरीर सम्बन्धी आदेशों का पाठ किया और बहुत अच्छी व्याख्या की। व्याख्या करते हुए बताया कि आत्मा का ज्ञान सबसे श्रेष्ठ ज्ञान है। शरीर और आत्मा का अकाट्य, सम्बन्ध है। मनुष्य का अस्तित्व नेचर का अंश होकर उसके सब विभागों से जुड़ा हुआ है। मनुष्य का लक्ष्य प्रत्येक नीच गति से मोक्ष पाना है, उच्च गतियों को विकसित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों की अत्यन्त आवश्यकता है, जो उनकी सच्ची उपासना के बिना प्राप्त नहीं होते। इस सभा में भी 70 के लगभग जन शामिल थे।

शाम 4.30 बजेः सभापति श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान।

विषयः - भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज। इस सभा में 70-75 जन शामिल थे। सभापति जी ने बताया कि हम ऐसे युग में पैदा हुए हैं, जिसमें नीच अनुरागों की भरमार है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ऐसे ज़हूर हुए हैं कि जिनके भीतर देव शक्तियां पैदा हुई हैं। उनके प्रभाव सच्चे उच्च परिवर्तन पैदा करते हैं। उन्होंने कंवर दविन्द्र सिंह जी लुक्खी और श्रीमान मिस्तरी वधावा राम जी (दाता जी) के उच्च परिवर्तन का सुन्दर रूप पेश किया। सभापति जी ने श्रीमान गिरधारी लाल जी के विषय में भी सुन्दर शब्दों में ब्यान किया।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने दाता जी की पवित्रता, मेहनत, पर सेवा का बहुत सुन्दर दृश्य खींचा, जो उनके आगे झुकने के लिए मजबूर कर रहा था। श्रीमान कंवर दविन्द्र सिंह जी का भी आश्चर्य जनक परिवर्तन बताकर बहुत प्रभावित किया। यह सारे परिवर्तन परम पूजनीय भगवान के आगे नतमस्तक होने के लिए विवश कर रहे थे।

28.9.2014 सुबह 9 बजेः सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि नीच जीवन क्या होता है। हम अपने उच्च वा नीच भावों के द्वारा गतियां करते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपने प्रभावों के द्वारा इस नारकीय संसार से पाप मिटाने वा नीच जीवन मिटाने का काम

करते हैं। उन्होंने नीच जीवन से निकल उच्च जीवन में विकसित आत्माओं की उदाहरणें पेश की। कई जनों को हाजरीन में से खड़े करके शहादत पेश की कि कैसे उनके जीवन में उच्च परिवर्तन आया है। ऐसे अनोखे सत्गुरू के अनोखे कारज को बताते हुए बार बार सभापति जी की आखें भर भर कर आ रही थी। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी गुरू महाराज के महान कारज का वर्णन किया। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

भाव प्रकाश

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंनें बताया कि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को जब किसी नौजवान ने पत्थर मारा, तो उन्हें अपने जिस्मानी दर्द को ज़्यादा इस बात का दर्द था कि वह नौजवान अब मेरे पास नहीं आएगा और कोई लाभ नहीं उठाएगा। उनके भीतर दूसरों का भला करने का जनून था। यहां तक कहते थे कि यदि आदमखोर मुझे उठाकर ले जाएं और मुझे पकाकर खाने की तैय्यारी कर रहे हों तो मैं उनसे बेनती करूंगा कि आप बेशक मुझे खा लें, क्योंकि मैं अब कहीं भाग तो सकता नहीं परन्तु उससे पहले मेरी एक सभा सुन लें, एक सभा से ही गुरू की कृपा से मैं उनका मास भक्षण छुड़वा दूंगा।

नीच जीवन आत्मा का कातिल है। नीच जीवन त्याग करवाना आसान नहीं "कंचन (सोना) तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह, मान, बड़ाई, ईर्षा दुर्लभ तजनी ऐह" परन्तु पूजनीय भगवान ने मरती हुई रूहों को बचाने का मिशन बनाया है। उसके बाद धन जन की अपील की जिसमें निम्नलिखित जनों ने सत्संग में आने का वायदा किया। बेनी प्रसाद जी, चौधरी नरेन्द्र जी, खुशपाल जी, सब सत्संगों में ओम प्रकाश जी वर्मा, श्री महिन्द्र सिंह जी B.P.E.O. , सुभाष जी, जगजीत सिंह जी, डा॰ जैरथ जी सब सत्संगों में। श्री चन्द्रगुप्त जी 2 सत्संगों में।
दानः डाक्टर विनोद जी खेड़ा, 10,000।
सुरजीत बराड़ : 5000
डाक्टर नम्रता : 5000
श्रीमती भरपूर कौर जी : 3000

बाकी जनो ने भी, 1000, 500, 200 आदि दान में दिए।

भाव प्रकाश

महिन्द्र सिंह जीः – मुबारक, 45 वर्ष शराब पीते हुए हो गए, अब यहां आने का मौका मिला। मैं बूटा सिंह जी का ऋणी हूं, जो मुझ पापी को यहां ले आए और मेरी सेवा करते रहे। मैंने कभी समाज को महत्व नहीं दिया, यहां आकर आनन्द आ गया। अपनी पीढ़ी नीचे सोटा मारा। आत्मा बारे चर्चा सुनी। 15 अक्तूबर तक शराब, मांस नहीं प्रयोग करूंगा।

रजिन्द्र जी देहरादून :– श्रीमान जी मेरे मां बाप समान है। मेरा बहुत ध्यान रखते हैं। मैंने समाज में आकर अपने जीवन में स्वर्ग आया देखा है। मेरे शरीर पर अभी भी दाग हैं। मैं समाज को कभी नहीं छोड़ूंगा।

श्रीमान बेनी प्रसाद जीः मेरे में बहुत अभिमान है, जो कुछ बोलता है, तो मैं उसे झाड़ देता हूं। मैं अपने पोते को कहता हूं वह मेरे साथ क्यों नहीं घूमता, उसे सुनाता रहता हूं कि तुम मेरी पैंशन पर गुज़ारा करते हो। बहुत परिशोध करने बाकी हैं, बेटी, दोहते और अन्य जनों से भी क्षमा मांगूंगा।

श्रीमान जगजीत सिंह जीः – प्रतिदिन गुरू महाराज़ को अपने बज़ुरगों के उपकारों को सामने लाकर प्रणाम करता हूं। चारों जगतों के उपकारों को

सामने लाता हूं।

श्रीमान किशन सिंह जी चौहानः – यहां आकर बहुत लाभ हुआ है। प्रबन्ध का धन्यवाद करता हूं। यहां एक दादा, बेटा और पोता देखकर बड़ी खुशी हुई। रजिन्द्र जी के परिवर्तन से बड़ी खुशी मिली है। मैं श्रीमान जी का उपकृत हूं। मैं इसका कर्ज़ा नहीं उतार सकता। जो काम यहां हो रहा है, वह सराहनिये है। श्री अकबरपुर सब सेवकों के लिए खुला है। श्रद्धा की कमी है, तो वह हममें है। मैं गुरू दर की सेवा में सच्ची खुशी अनुभव करता हूं।

डाक्टर जैरथ जीः – मैं किसी कारण कल नहीं आ सका। मुझे कुछ ज्ञान तो है, पर बताने में झिझक आती है। मैं साधन नहीं करता। बोध, भाव क्या होते हैं इसका ज्ञान मिला। मुझे देव प्रभाव धर्म सम्बन्धी पहुंचाते हैं। मैं इनकी संगत करना चाहता हूं। सभा परिचालिकों का धन्यवाद करता हूं।

श्रीमान मधुसूदन जीः – अपनी तरफ ध्यान जाता रहा है, सौभाग्य से सभा का मौका मिला है। अपने उपकारी नज़र आए हैं। हमारे ऊपर मेहरबानियों की बारिश हुई है। चारों जगतों का ऋणी अनुभव करता हूं।

शौर्य जी – मेरे नाना जी के (चौहान साहिब) कारण मेरा समाज से सम्बन्ध है। देव स्तोत्र याद है। भजनों को गाते समय उनके साथ दिल का मेल नहीं होता। मेरा घमंड है जो मैं नाना जी और नानी जी को खुश नहीं कर सकता। सभा सुनने से कतराता हूं। मैं स्वार्थी हूं। मेरा स्वार्थ कम हो सके।

भरपूर कौर : मैं 19 तारीख़ से ही सत्संग में शामिल हो गई थी। मैं बहुत खुशकिस्मत हूं जो इस सत्संग में आ गई। हर सभा में धन्य धन्य होती रही हूं। श्रीमान जी के बहुत उपकार हैं। समाज से दूर रहकर हम बच नहीं सकते। श्रीमान जी, कृपा करके मेरे बच्चों को इस सत्संग से जोड़े रखना। आप हमारे लिए अनथक मेहनत करते हो। अमरीका में भी इतनी दूर से आकर हमारे घर में सभाएं कराई। सब को बहुत ही लाभ हुआ। गुरू महाराज की रोशनी के बिना हम अन्धे हैं। आत्मा के विषय में जो आपने बताया, आत्मा की खुराक क्या है, आत्मा कैसे बलवान बनती है। आज के युग में अपनी आत्मा की रक्षा कैसे करनी है? हम नाशवान चीजों से ऊपर उठकर आत्मा की रक्षा कर सकें। मैं कोशिश करूंगी कि मैं कुछ न कुछ इन बन्धनों से मुक्त हो सकूं। मैं ज़िन्दगी का बहुत सा भाग गंवा चुकी हूं। अपने आत्मा को हानि से बचाना बहुत कठिन काम है।

मुझे उपकारियों के बहुत से उपकार नज़र आए हैं। श्रीमान बचित्र सिंह जी हमें पहले इस सत्संग में लेकर आए, नहीं तो शायद हमें इस दर का पता ही न चलता। मेरा दिल चाहता है कि घर घर का कुण्डा खटखटाऊं। हम बचे हैं और लोग भी बच जाए। श्रीमान जी मेरे पास शब्द नहीं, जिनके द्वारा मैं आपका धन्यवाद कर सकूं। यदि आप हमारे घर अमरीका जाकर मेहनत न करते तो शायद मेरा दिल इस सत्संग के लिए भी तैय्यार न होता। आपका कर्ज़ा मैं तो इस जन्म में उतार नहीं सकती।

मुझे अपने पति के साफ हृदय के लिए सन्मान पैदा हुआ है। उनके उपकार नज़र आ रहे हैं। अब उनका और भी सत्कार करूंगी। गुरू कृपा से मेरे व्यवहार ही मेरे भावों को व्यक्त करेंगे।

मैं अपने आपको उपकारियों के उपकारों से लदी हुई महसूस करती हूं। भजनी बहन जी ने बेहद

सेवा की है। इन सभाओं के पूरे लाभ मैं लिख ही नहीं सकती।

रणदीप सिंह (पुत्र अवतार सिंह बराड़) : श्रीमान जी, मुझे इन सभाओं में बहुत लाभ हुआ है, उसका ब्यान तो कठिन है, पर यहां आकर अपना आप दिखाई दिया है, जो कभी दिखाई न देता। सभाओं में बैठकर मुझे अपनी कमियां दिखाई दी हैं। आपके और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के हमारे ऊपर बहुत उपकार हैं। आप दोनों की कृपा से मैं मोटी बुराईयों से बचा रहा। मैं अपने माता पिता और अपनी बड़ी बहनों का उपकार सारी उमर नहीं भूल सकता। छोटी छोटी बातें मुझे सभा में बैठकर नज़र आई हैं। मैं नाशुकरा हूं। अब मैंने अपनी कमियां दूर करनी है। मुझे यहां से ताकत मिली है।

मुझे पहली बार यह पता लगा है कि धर्म क्या है? मैं कभी मिथ्या में नहीं गया, परन्तु सच्चे धर्म का भी पता नहीं था। पता ही नहीं था कि नीच भावों से मोक्ष ही धर्म है। उच्च भावों से जीवन व्यतीत करना ही धर्म है।

मैं यही कामना करता हूं कि मैं सदा इस संगत से जुड़ा रहूं। अब मैं अपने सम्बन्धों में और सुधार लाऊंगा। यह संगत बार बार मिलती रहे तो बचे रहेंगे।

वीरपाल कौर (समराला): सबसे पहले मैं श्रीमान बलदेव सिंह जी की बहुत धन्यवादी हूं, इनसे बहुत सेवा पाते हैं। इनके कारण ही हमें सभाएं सुनने का मौका मिलता है। डा० इकबाल सिंह जी (पिता जी) इनकी ही तरह हमारा ख़्याल रखते थे। जैसे श्रीमान जी कहते हैं कि चाहे कितनी भी हानि होती हो सभाएं नहीं छोड़नी चाहिए। यहां आकर घर वा स्कूल बिल्कुल याद नहीं आया। मैं सोचती थी कि मैं पापों से बची हुई हूं, मैं कोई निन्दा चुगली नही करती, किसी की हानि नहीं करती। यहां आकर पता लगता है कि मैं कितनी ग़ल्तियां करती हूं, जो गुरू महाराज को बिल्कुल पसन्द नहीं।

मेरे माता जी मुझे अकेली सोचकर मेरे पास रहती थी, उनका यहां दिल नहीं लगता था, फिर मेरे भाभी जी रहे परन्तु उन्हें अपनी लड़कियों के साथ चण्डीगढ़ आना पड़ा, तो मेरे माता जी मेरे पास नहीं आए तो मुझे बहुत गुस्सा आया। मेरे माता जी के मेरे पर बहुत उपकार हैं, मैं सब भूल जाती हूं। मेरे भाई, भावजा मेरा बहुत ख़्याल रखते हैं। मैं समझती थी कि यह तो उनका फर्ज़ है। अपने अन्दर बहुत कृत्घनता नज़र आई। मैंने अपनी माता जी से लम्बी बातचीत की और बहुत सकून मिला। मैं इस संगत में बैठकर धन्य धन्य हो गई हूं। उन्होंने 1000रू० दान में दिए।

पुष्पाल सिंह :- मैं केवल शराबी ही नहीं, मैं बहुत कपटी भी हूं। मुझे जो दूध पिलाता था, मैं उसी को ढंक मारता हूं। मेरा रोम रोम, कपटता, नाशुक्रगुज़ारी के साथ भरा हुआ है। मुझे अपने भीतर कोई अच्छाई नहीं दिखाई देती। कुछ सभाएं सुनकर एक दो रोमों ने मुझे अन्दर झांकने का अवसर दिया है। मेरे यही रोम मेरी ओर देखकर हंसते हैं, कि अब पता नहीं किसको डसना है और डसने की तैय्यारी है। मैं कोई भी प्रतिज्ञा नहीं करूंगा, परन्तु सारी सभाएं सुना करूंगा और आऊंगा। श्रीमान जी मुझ तक देव प्रभाव पहुंचाएं और मेरी मदद करें, कृपा होगी।

गुरिन्द्र सिंह (मौड़ा, संगरूर एक नया नौजवान):- मैंने पहली दफा देव धर्म की एक झलक देखी है, जिसने मेरी सम्पूर्ण शख़्सीयत को मेरे सामने खड़ा कर दिया है।

मैं एक नास्तक इन्सान था, मैं किसी भी

शिक्षा को नहीं मानता था। मैं एक धार्मिक परिवार में जन्मा, परन्तु कभी किसी धर्म पर विश्वास नहीं किया। परमात्मा पर कभी विश्वास नहीं किया, शुरू से ही मैं इन्सानियत पर विश्वास करता था।

यहां की सभाएं सुनकर मुझे आनन्द आ गया। इनमें मुझे असली इन्सानियत के सिद्धान्त नज़र आए। मुझे यह महसूस हुआ कि कि मनुष्य में यही गुण होने चाहिए। यही धर्म होना चाहिए। दया, प्रेम, सबको अपना समझना, जितनी हो सके किसी की मदद करनी, नशों से रहित, अपने शरीर और आत्मा की सम्भाल करनी, इन बातों ने मेरे दिल पर असर किया।

मैं मोटी बुराईयों से तो पहले ही बचा हुआ था, जो छोटी छोटी और बुराईयां हैं, उनसे भी दूर रहने का यत्न करूंगा। मुझमें एक बड़ी बुराई मांसाहार की थी, आज से उसे छोड़ने की भी प्रतिज्ञा करता हूं। अब पूर्ण शाकाहारी रहूंगा।

बाकी धर्मों से अलग इस धर्म में यह बात है कि इन्सानी रिश्तों, सफल जीवन और सुखी जीवन के विषय में बताता है। इससे प्रभावित होकर मैं अपने माता पिता को भी यहां लेकर आया हूं।

श्रीमान जी मुझमें बहुत बुराईयां हैं, जिनके बारे में अभी मुझे ज्ञान नहीं, पर पक्का विश्वास है कि आप जैसे उच्च जीवनधारियों की संगत से मैं अपनी बुराईयां जान लूंगा और दूर करता रहूंगा। हम हररोज़ तबदील होते हैं, अब मैं अपने आपको अच्छा बनाने के लिए प्रतिबद्ध हूं। आने वाले समय में जितना हो सका मैं संगत में आने की कोशिश करूंगा।

अशोका जी (अम्बाला) :- मैं पूजनीय भगवान, सहायकारी शक्तियों वा परलोक वासी शक्तियों, श्रीमान जी का बहुत बहुत धन्यवाद करती हूं, जिनकी कृपा से मैं इस सत्संग वा उत्सव से लाभ उठा सकी हूं। इन सभाओं में मुझे समझ में आया है कि सचमुच मैं नहीं जानती कि मैं स्वयं क्या हूं? आपने कहा कि लिखना कि आप भाई से कितनी बार लड़ती थी। इस एक लाईन से ही मुझे अपने आन्तरिक रूप का पता लग गया। मुझे अपने अंह को देखने के लिए मजबूर कर दिया। मुझे पता चला कि मैं बनती तो बहुत न्यायप्रिय हूं, वास्तव में मैं स्वेच्छा-चारिता (मैं, ठीक हूं, मेरी अक्ल ठीक है) से अपने सन्मान भाव का नाश करती हूं, यह सब अहं के ही कारण है। मैं अपनी ग़ल्ती दूसरों पर थोपने की प्रकृति रखती हूं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने जैसे वधावा राम जी (दाता जी) मिस्त्री के पांव दबाए, इतनी बड़ी हस्ती में इस कदर दीनता अपना अंहकारी रूप नज़र आया।

उच्च गुणों को देखकर मेरे श्रद्धा भाव को खुराक मिली है। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सभा भी करवाते, अलग अलग ग्रुप में बैठकर, हमें देव प्रभाव पहुंचाते, जब मिलकर सब चारपाईयां बुनते, वहीं खाना खा लेते, वहीं दूध भी आ जाता, उनको कितनी थकान होती होगी। श्रीमान जी का एक बार फिर धन्यवाद करती हूं कि अपनी सेहत वा उमर की परवाह न करते हुए, हमारे भले का संग्राम करते हैं। जो यहां से बैटरी चार्ज हुई है, उसे बचाकर रखूंगी और अपने नीच भावों से लड़ने का संग्राम करूंगी।

गोपाल जी (गंगानगर) :- सभा के उच्च मण्डल से बहुत अच्छे प्रभाव मिले। अपनी माता के जन्मदाता उपकृत रूप की झलक मिली कि उनका सबसे बड़ा उपकार मेरी हस्ती को जन्म देना है, यह दुनिया दिखाना। मेरे वजूद का जन्म ही उनकी देन है। सभा में स्त्री जाति के कई सुन्दर गुणों की झलक मिलती है। आज इस तरफ ध्यान फिरा कि बहुत संख्या में स्त्रियों का यह उच्च गुण है कि वे नशे,

मासांहार और मोटी बुराईयों से बची हुई हैं। अगर हमारे घर की स्त्रियां शराब, मांस, नशे आदि में लिप्त होती तो कोई बच्चा इनसे अछूता कैसे रह सकता था? हमें गाँधी जी और अन्य उच्च गुणों, सात्विक गुणों को रखने वाली महान हस्तियां कैसे प्राप्त होती? प्रेम, वात्सल्य, दया आदि भी स्त्री जाति का महान, योगदान है। पहले भी कई बार उच्च प्रभावों के कारण स्त्री जाति का पूरे मनुष्य मात्र को जन्म देने वाला रूप महसूस होकर और इस तरफ 'अपनी सोच' देखकर बड़ी शरमिन्दगी और स्त्री जाति की महानता महसूस होती रही है।

हालांकि यह अच्छी सोच उच्च मण्डल के असरों के कारण कुछ समय के लिए ही बनती है परन्तु फिर भी दुनियां के मुकाबले तुलना करूं तो बहुत मुबारक है, और इसके लिए भिखारी हूं।

कुल 40 हज़ार के लगभग दान प्राप्त हुआ। कुछ नये जनों ने लाभ उठाया। 2 हज़ार के लगभग किताबें बिकी। कश्मीर की त्रासदी में सहायक होने और प्रधान मन्त्री फंड में कुछ न कुछ रू० भेजने की अपील की गई।

भक्ति भाजन भगवन

आपकी ज्योति हमारे पापों और दोषों को दिखाती है।

भगवन्!

आपकी अद्वितीय ज्योति की यह विशेषता है कि वह हमारे दोषों, दुर्बलताओं और पहले किए हुए पापों तक को दिखाती है। वह उनका असल और घृणित रूप दिखाती है। इसीलिए हम तुच्छ आत्मा उसे पाकर और अधिक ज्योति के लिए प्रार्थना करते हैं, और आपके सम्मुख और आपके महान शिष्यों के सम्मुख अपनी नीचताओं को स्वीकार करना हमारे लिए एक स्वाभाविक सी बात हो जाती है। होश रखने वाले स्त्री पुरुष अपनी प्राईवेट से प्राईवेट बिमारी भी डाक्टर को बताने में संकोच नहीं करते।... इसी प्रकार जब आपकी ज्योति हमारे रोम रोम को ज्योर्तिमान करती है और हमारे आत्मा की दुर्बलता का असल और भयानक रूप दिखाती है तो हम भागकर आपके चरणों में पहुंचते हैं और अपनी अवस्था खोलकर आपके सम्मुख प्रकट कर देते हैं। आपकी ज्योति जब हमें छोड़ देती है तो हमारी नीचताओं पर परदा पड़ जाता है, और फिर वह हमें घृणित प्रतीत नहीं होती।... यहां तक कि हम उन्हें प्यार करने लग जाते हैं। फल यह कि हम उल्टा उनको घृणा करने लग जाते हैं, जो उनका बुरा रूप हमें दिखाते हैं।

आपकी ज्योति में ही मेरी रक्षा है।

जीवनदाता भगवन्!

आप जो महा दान देते हैं, उसको हम माप नहीं सकते। यदि मेरे हृदय में अधिक कृतज्ञता होती तो मैं आपके सम्बन्ध में छोटे से छोटे दर्जे की सेवा के लिए अपना सारा जीवन भेंट कर देता। आप ज्योति दाता हैं। ऐसी ज्योति संसार ने इससे पहले कभी नहीं देखी थी। आपकी ज्योति में मैं अपना मोहताज रूप देख पाता हूं और इसलिए दीनता की अवस्था में रहता हूं। आपके सन्मुख अत्यन्त दीनता और आज्ञा पालन के भाव से खड़े रहने की पवित्र अवस्था ही मुझे अपने

लिए एकमात्र रक्षाकारी अवस्था प्रतीत होती है, यदि मैं जीना चाहता हूं। आपकी ज्योति में मेरे दोष मुझे दिखाई देते हैं। इसलिए मेरा डंक मारने वाला अहंकार दूसरों के दिलों पर ज़ख्म या आघात लगाने का बहुत कम अवसर पाता है। मैं देखता हूं कि आपकी ज्योति के बिना मैं उच्च सत्यों के दर्शन नहीं कर सकता। अत: आपको अपना ज्योति दाता उपलब्ध करने का स्वर्गीय भाव मुझमें जागृत होता जा रहा है। आपकी ज्योति की यह अनुपम विशेषता है कि वह हमारी दृष्टि को हमारे आंतरिक जीवन की ओर फेरती है। इसीलिए यह हमें सुरक्षित रखती है। भगवन! यह केवल आपकी ज्योति में ही सम्भव है कि मैं उच्च लोक की सच्चाईयों का दर्शन कर सकूं, कि जो महान सच्चाईयां मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पद हैं। आपकी ज्योति में मेरा पाप और मिथ्या का पुराना जीवन दिनों दिन घृणित अनुभव करता हूं, जो मेरे जीवन को विश्वास पात्र और हितकर बना सकते हैं। भगवन! आज मैंने फिर आपको अध्यात्मिक जगत के एकमात्र सूर्य के रूप में देखा है। मेरी यही प्रार्थना है कि यह विश्वास गहरे होते जाएं। मेरा आपके देवरूप में ऐसा अटल विश्वास हो, जैसा ईसा समीह के सम्बन्ध में सैंट पाल का और बुद्ध के सम्बन्ध में आनन्द का था। यह विश्वास और यह आस्था मुझे गिरावटों से बचाएंगे और जो निष्फल जीवन मैं व्यतीत कर रहा हूं, उससे मेरी रक्षा करेंगे। तब मैं सच्चे अर्थों में जीना और चमकना आरम्भ करूंगा। कम से कम आज तो मेरा विश्वास गहरा हो गया है और मैं अनुभव करता हूं कि आप ही एकमात्र सत्य उपास्य देव हैं और मानवता आपके बिना उच्च ज्योति प्राप्त नहीं कर सकती। मैं इस विश्वास को उन्नत करूंगा क्योंकि यह मेरे आत्मा को पवित्र और बलवान बनाए रखता है। काश! यह गहरा विश्वास कि आप जीवन दाता हैं, मुझ में उन्नत होता जा सके। यह ज्योति मुझे सदा ज्योर्तिमान कर सके।

झूठ आत्मा के लिए पतनकारी है।

मेरे भगवन्!

आपके पावन प्रभावों से परे मनुष्य आत्मा के लिए कहीं भी रक्षा नहीं है। प्रत्येक आत्मा के लिए आपकी ज्योति नितान्त अनिवार्य है। इस अद्वितीय ज्योति के बिना कोई अपने आत्मा का ठीक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। परन्तु जब आपकी ज्योति हमारे आत्मा में प्रवेश करती है और हम एक ओर अपना रूप देखते और दूसरी ओर आपके रूप के दर्शन करते हैं, तो यह पुकारने के लिए विवश हो जाते हैं कि, "हे सत्यदेव! आपके बिना हमारा कहीं ठिकाना नहीं।" मुझे इसका बोध हो गया है। मैंने देखा है कि मेरे अपने भाव तो मेरे आत्मा में अन्धकार उपजाने का महा भयानक मैलान या स्वभाव रखते हैं। मेरे अधिकतर भाव नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं, और यदि कोई ऐसे भाव हैं कि जिन्हें उच्च या सात्विक कहा जा सकता है, तो उनमें ऐसी समर्थ्य नहीं कि वह मुझे आत्मा का रूप और उसकी अवस्था दिखा सकें तथा मुझे सचाई और भलाई की ओर ले जा सकें। इसके विपरीत वह मुझे जोर से झूठ की तरफ घसीटते हैं। मैंने आपकी ज्योति में देखा है कि असत्य की ओर ले जाने वाली मेरी आत्मा की प्रत्येक गति मेरे लिए पतनकारी है। असत्य आखिर असत्य है और मेरे

आत्मिक जीवन को नीचे गिराने वाला है। आपकी ज्योति झूठ का भयानक रूप दिखाती है। आपकी यह ज्योति मुझे ऐसे ही स्पष्ट रूप से जैसे कि मैं बाहर की वस्तुओं को बाहर की आंखों से देखता हूं, यह दिखाती है कि असत्य का व्यवहार चाहे किसी भी लक्ष्य के लिए हो, वह मेरे आत्मा के बल को घटाता है और उसे मृत्यु की ओर ले जाता है। मैं स्पष्ट रूप से देखता हूं कि यही (असत्य) अस्तित्व का ही कुछ मूल्य नहीं रहने देता। जो अस्तित्व झूठ में रस लेता है, वह कूड़े करकट पर जीता है और उसकी अवस्था बहुत शोचनीय है।

इस प्रकार आपने मुझे असत्य का असली-काला, भयानक और पतनकारी-रूप दिखाया है। इसलिए मेरी आपके चरणों में यह व्याकुलता पूर्वक प्रार्थना है कि चूँकि मेरी अपनी अवस्था ऐसी कृपापात्र है, इसलिए मैं आपके चरणों से अधिक लिपटता जाऊं, ताकि झूठ की ओर ले जाने वाली रुचियों से मेरा उद्धार हो।

आपका अस्तित्व कैसा परम सुन्दर! मानवता के लिए यह कैसा वरदान है कि आप इस पृथ्वी में आर्विभूत हो गए। जब मैं चारों ओर देखता हूं कि कहलाने वाले पैग़म्बरों ने या सम्प्रदायों के संस्थापकों ने और तथाकथित देवतों और देवियों ने असत्य को अपनाया है, और कहलाने वाली धार्मिक पुस्तकों में जिन्हें लाखों करोड़ों मनुष्य पढ़ते हैं, बच्चों की सी कल्पनाएं और झूठ और पाप की शिक्षा भरी पड़ी है, और धार्मिक कहलाने वाले कई सम्प्रदाय भी धोखे और कपटता को बड़ा सदगुण मानते हैं, और नाना मनुष्यों के साथ अपने व्यवहार में बिना किसी लज्जा के झूठ के खोटे सिक्के का प्रयोग करते हैं, तो मैं इसको एक अत्यन्त विस्मय जनक घटना समझता हूं कि सत्य और शुभ के पूर्णांग प्रेमक देवात्मा इस पृथ्वी में प्रकट हो गए और मुझे उनकी शरण में आने का महा अधिकार प्राप्त हो गया। मेरे भगवन! ऐसा आर्शीवाद प्रदान करें कि मैं यह सौभाग्य पाकर उन महान ख़ज़ानों को प्राप्त कर सकूँ जो आपके देव प्रभाव प्रदान करते हैं। मुझे यह आर्शीवाद दीजिए कि मैं असत्य को घृणा करने के योग्य होता जाऊं और भिक्षुक बनकर आपका ऐसा बल पा सकूँ कि जिसे पाकर मैं सत्य का साथ दे सकूँ और अपने आत्मा का निर्माण और उसे विकसित कर सकूँ कि जो संसार में हमारे लिए सब लाभों से बढ़कर लाभ है।

पी. वी. कनल

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022

Phone : 0172 - 4638229, 2716914

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

शुक्रवार 05 दिसम्बर 2014

प्रवेश सभा - 4.30 बजे सायं

शनिवार 06 दिसम्बर 2014

1- पहली सभा - 9.30 बजे प्रात:

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2 - पब्लिक लैक्चर - 4.00 बजे सायं

3 - संगीत सभा 7.30 बजे सायं

ईतवार 07 दिसम्बर 2014

(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि - 6. 30 बजे प्रात:

1- पहली सभा 9.00 बजे प्रात:

विषय – भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता। धन और जन की अपील ।

2 - दूसरी सभा - 2.00 बजे दोपहर - बच्चों की सभा और कुछ भजन।

3 - पब्लिक लैक्चर - 4.00 बजे सायं

4 - दीप माला - 6.00 बजे सायं

5 - आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर भी दे सकते हैं)

मंगलवार 09 दिसम्बर 2014

1- पहली सभा - 8.30 बजे प्रात: सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2 - भाव प्रकाश

3 - देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :-

1. कृपया सेवक - सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।

2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।

3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।

4. अपने आने की सूचना, संख्या समेत, पहले देने की कृपा करें।

फोन : 0172 - 2716914, 9815531038, 9463836617

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts